SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

शास्त्रीय संगीत के संवर्धन में महिला सितार वादकों का योगदान: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

DR. RITU SINGH
Assistant Professor (Sitar) , Kamla Arya Kanya P. G. College, Mirzapur

सार

भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परम्परा की अनन्य धरोहर हमारा भारतीय संगीत सृष्टि के स्वर्णिम विहान से ही संसार की प्रत्येक गतिविधियों में परिव्याप्त रहा है। यह एकमात्र ऐसी कला है जो मानवीय भावनाओं की अभिव्यंजना का सशक्त और सुन्दरतम माध्यम है। संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों के साथ ही साथ सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक भी रहा है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को उसकी सुविकसित, सुपरिमार्जित अवस्था के कारण ही विश्व के अन्य देशों के संगीत से श्रेष्ठतम माना जाता है। संगीत का जो स्वरुप आज देखने को मिलता है, वह हजारों वर्षों से होने वाले क्रमिक विकास का परिष्कृत प्रतिरुप है। भारतीय संगीत के सुदीर्घ ऐतिहासिक कालक्रम का अवलोकन करने पर यह दृष्टिगत होता है कि इतिहास का कोई कालखंड ऐसा नहीं है जब महिलाओं ने अपनी कलाप्रियता एवं सृजन कौशल का परिचय न दिया हो। नारी और कला एक दूसरे की पर्यायवाची हैं। नारी सृष्टि की वह सुंदर संरचना है जिसका सम्बन्ध ललित कलाओं से होना स्वाभाविक है। नारी की प्रेरणा से ही संगीत में सौन्दर्य एवं माधुर्य की स्थापना हुई है। वास्तव में गीत, वाद्य एवं नृत्य तीनों सांगीतिक अंगों के विकास एवं माधुर्य की स्थापना में भारतीय महिला की प्रेरणा एंव योगदान अविस्मरणीय है।

शोध उद्देश्य : प्रस्तुत शोध-पत्र के लेखन का मुख्य उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत के महिला सितार वादकों के कलात्मक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालना तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के संवर्धन में उनके बहुमूल्य योगदान का अध्ययन करना है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध-पत्र के लेखन हेतु पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों एंव साक्षात्कार से तथ्यात्मक सामग्री संकलित की गयी है।

बीज शब्द : *संगीत, सितार, महिला कलाकार, सृजनशीलता, कलात्मक वैशिष्ट्य।*

विषय प्रवेश

भारतीय संगीत की आधारभूत विशेषता राग व तालों का चमत्कारिक प्रदर्शन है, जो कि किसी कलाकार की व्यक्तिगत प्रतिभा और कल्पना को उदिप्तमान करती है। भारतीय संगीत कला की एक गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि है और इस गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि में भारतीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में महिला कलाकारों की सशक्त भूमिका सदैव से ही रही है।

वर्तमान समय की सशक्त महिला सितार वादकों का पर्यवेक्षण करने से यह द्रष्टव्य होता है कि महिला कलाकारों ने तन्त्री वादन के क्रियात्मक संगीत के साथ-साथ नित्य नवीन रागों का निर्माण एवं वादन शैलियों में नूतन आयामों का समावेश कर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को अनन्त विस्तार दिया है। इन महान कला साधिकाओं की निरंतर कठोर साधना, रियाज, शिक्षा तथा असीम लगन के साथ इस कला को अपनाकर इन्होनें संगीत के प्रत्येक पक्ष पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। तन्त्री वादन की परम्परा में अनेक सितार साधिकाओं ने अपनी योग्यता और सृजन क्षमता से भारतीय संगीत को उत्कृष्टतम स्थान पर पहुँचाया है।

वर्तमान समय में जिन महिला सितार वादकों ने अपने सितार वादन में विभिन्न कलात्मक तत्वों का मिश्रण कर अपने अथक परिश्रम के फलस्वरूप सितार वादन की नित-नवीन पृष्ठ भूमि तैयार की उनकी शैलीगत विशेषता एंव कला वैशिष्ट्य का स्तवन इस शोध पत्र के माध्यम से विशेष रूप से उल्लेखनीय है-

मीता नाग

विदुषी मीता नाग वर्तमान समय में न केवल भारत की अपितु दुनिया के उत्कृष्ट महिला सितार वादकों में से एक हैं। विदुषी मीता नाग कोलकाता के महान सितार वादक पंडित मणिलाल नाग की बेटी और शिष्या और विष्णुपुर संगीत विद्यालय के संगीताचार्य गोकुल नाग की पोती हैं। सितार वादकों के नाग परिवार की छह पीढ़ियों की वंशावली पश्चिम बंगाल के बांकुरा शहर में रामशंकर भट्टाचार्य के समय से चली

आ रही है, जो इस घराने के शुरुआती संगीतकारों में से एक थे। मीता जी ने साढ़े चार साल की अल्पावस्था से ही अपनी मां के सान्निध्य में संगीत की शिक्षा लेना शुरु कर दी थी। सितार वादन की विधिवत शुरुआत उनके दादा, गोकुल चंद्र ने की थी, और प्रारंभिक वर्षों के बीज उनके गुरु और पिता, मणिलाल के संरक्षण में संगीत परिपक्वता में बदल गए।

आपकी सांगीतिक शिक्षा अत्यन्त ही कठोर अनुशासन एवं नियमबद्ध ढंग से प्रारम्भ हुई, जिसके फलस्वरूप आप जैसी उत्कृष्ट सितार वादिका का प्रादुर्भाव संगीत जगत में हुआ। आपके वादन में शास्त्रीय संगीत की कलात्मकता को जीवन्त एवं हृदयग्राही रूप में प्रस्तुत करने की विलक्षण प्रतिभा दृष्टिगोचर होती है। आपके वादन में गायकी अंग की झलक स्पष्ट रूप से द्रष्ट्व्य है। आप अपने सितार वादन में विशिष्ट चमत्कार के साथ सहज स्वर लगाते हुए और आलाप में राग की शुद्धता को बरकरार रखते हुए सुर-दर-सुर राग के सौन्दर्य का अनावरण करते हुए कलात्मक वैशिष्ट्य की परिकाष्टा पर पहुँचती हैं।

आपके वादन में बीनकारी अंग की प्रबलता है। ध्रुपद का विशेष प्रभाव, सुदीर्घ आलाप, राग की शुद्धता तथा संचारी आलाप में गहरी स्पष्टता के साथ श्रोताओं को आन्नद के चरमात्कर्ष पर ले जाना आनके सितार वादन की प्रमुख विशेषता है।

अनुपम महाजन

सुविख्यात सितार वादिका प्रो0 अनुपम महाजन का जन्म 13 अगस्त 1957 में पंजाब के अमृतसर में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। इनकी माता का नाम कैलास रानी एंव पिता का नाम पन्ना लाल है। भारतीय संगीत शास्त्र और उसकी बारीकियों की अकादमिक अधिकारी अनुपम ने वाद्य संगीत में स्नातकोत्तर व डी फिल की उपाधि विशेष योग्यता के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्जित की है। दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत कला संकाय के अध्यक्ष पद को शोभायमान कर चुकी अनेक सम्मानों से अलंकृत जयपुर सेनिया घराने की सुप्रसिद्ध सितार वादिका प्रो0 अनुपम महाजन वर्तमान काल की एक प्रतिनिधि सितार वादिका हैं। आप पद्मभूषण अंलकृत पं0 देवव्रत (देबू) चैधरी जी के शिष्यों की सूची में सबसे प्रिय एवं होनहार शिष्या हैं। आप ने दादा गुरू उ0 मुश्ताक अली खाँ से भी सितार की विधिवत तालीम ली है। इन्होंने अपने घराने की प्रमुख विशेषता 17 परदे के सितार वादन की परम्परा को कायम रखा है। इनके सितार वादन में कलात्मकता, चमत्कारिक अंलकरण, अद्भुत शालीनता का हृदयग्राही समन्वय देखने को मिलता है, जो कि इनके उत्कृष्ट सितार वादन की एक मौलिक विशेषता है। अतिदुत लय एवं अप्रचलित तालों में वादन आपकी प्रमुख विशेषता है। क्लिष्ट लयकारियों का प्रयोग आपके सितार वादन में बहुतायत देखने को मिलता है। तंत्र अंग को बरकरार रखते हुए स्वरों का माधुर्य, तोड़ों की विविधता के साथ-साथ मीड़, कण, खटका, मुर्की, जमजमा इत्यादि सौन्दर्य उपकरणों का प्रयोग आप अपने सितार वादन में विशेष रूप से करती हैं। इनके द्वारा लिखी गई पुस्तकें ' Raag in Hindustani Music-Conceptual aspects' और 'भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौन्दर्य शास्त्र' सितार वादन के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय कार्य हैं। इन्होने न्ळब् द्वारा प्रद्वत अनेक मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट पर कार्य किया है, जिनमें से' Prosess and Soureces of Research in Indian Classical Music' प्रमुख है।

अनुपमा भागवत

अनुपमा भागवत को 21वीं सदी के उत्कृष्ट और नवोन्वेषी सितार वादकों में से एक माना जाता है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा और उदार शैली के लिए जानी जाने वाली अनुपमा भागवत के सितार वादन में तकनीकी महारत अद्वितीय है। भिलाई, छत्तीसगढ़ में एक तेलुगु भाषी परिवार में जन्मी अनुपमा ने सबसे पहले वायलिन सीखना शुरू किया क्योंकि उनके पिता एक वायलिन वादक थे। अनुपमा कहती हैं, 'उन्हें 9 साल की उम्र में उनके चाचा आर एन वर्मा ने सितार से परिचित कराया था। उन्हे लगा जैसे सितार ने उन्हें चुन लिया है। श्री वर्मा से प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने पंडित बिमलेंदु मुखर्जी जी से सितार सीखना शुरू किया। बिमलेंदु मुखर्जी, उस्ताद इनायत खान (उस्ताद विलायत खान के पिता) के शिष्य थे। उनके संरक्षण में अनुपमा जी ने इमदादखानी घराने की पेचीदगियों और बेहतरीन तत्वों को आत्मसात किया, जिसे उनके गुरु ने मूर्त रूप दिया। इमादखानी घराना परंपरा के अनुरूप रहते हुए अपने प्रवाह, तेज तान और ध्यानपूर्ण आलाप और माधुर्य (राग-भाव) के शानदार प्रवाह के लिए अनुपमा देश ही नहीं अपितु विदेश में भी ख्यातिलब्ध हैं।

स्मिता नागदेव

प्रभावशाली वादन व प्रखर मेधा की धनी सितार वादक स्मिता नागदेव सांगीतिक दूत के रूप में एक जगमगाता नाम है। नागपुर में जन्मी स्मिता अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार सचिदा नागदेव की पुत्री हैं। सचिदा जी के एक संगीत साधक मित्र थे - सितार वादक वासुदेव राव आष्टेवाले। दूरदर्शी पिता ने इस अप्रतिम सितार गुरु की छाया में स्मिता को बहुत बाल्यकाल में ही सौंप दिया और शुरू हुई सितार के साए में स्मिता की परवरिश, वह भी ऐसी कठिन और अथक परिश्रम भरी कि नारी सुलभ कोमलता की प्रतिमूर्ति स्मिता की नन्हीं कोमल उंगलियों में रियाज दर रियाज गत्यात्मकता घुलती ही गई, घुलती ही गई। किशोरावस्था तक आते-आते स्मिता में साक्षात् सरस्वती का अवतरण हो आने के पीछे यही मौन साधना थी जिसका श्रेय वे अपने सितार गुरू को उसी विनम्रता से देती हैं, जैसे सभी शीर्षस्थ कलाकार देते आए हैं। स्मिता जी की वादन शैली की विशेषता है- बीन अंग का वादन, जो कि ध्रुपद गायकी से प्रेरित है। सितार में लरज - खरज का प्रयोग, आलापदारी, मींड का काम और सपाट ताने उनके वादन की प्रमुख विशेषता है।

सितार वादन में आप एक अद्वितीय कलाकार हैं। ध्रुपद अंग से नोम -तोम का जोड़ालाप एवं विभिन्न लयकारी से युक्त क्लिष्ट तानों के विभिन्न प्रकारों का वादन आपके वादन की विशेषता है, आपकी गतकारी में लय का विचित्र कार्य रहता है, जिसमें फिरत की तान, कूटतान, गमक तथा मीड़ युक्त स्वरावली का कथनानुसार वादन रहता है। आपकी रजाखानी गतों की लय अत्यधिक चपल होती है, जिसमें सपाट तानों का प्रयोग, गमक एवं लाग डाट आदि के दर्शन होते हैं। अन्त में आप झाले के विभिन्न छन्दों के प्रयोग के साथ उलट झाले का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर श्रोताओं को चकित कर देती हैं।

रागिनी त्रिवेदी

प्रसिद्ध विचित्र वीणा वादक और संगीतज्ञ पं० लालमणि मिश्रा जी की पुत्री रागिनि त्रिवेदी जी का जन्म 22 मार्च 1960 को एक उच्च कोटि के सांगीतिक परिवार में हुआ था। वर्तमान पीढ़ी के शीर्षस्थ महिला सितार वादकों में से रागिनी त्रिवेदी एक अग्रणी नाम है। शास्त्रीय संगीत के सम्यक आयाम से परिचित आपने अपने तन्त्री वादन शैली, शिक्षण-पद्धति, वाद्य-रूप, वादन-स्वरूप आदि सभी विषयों पर अनुकरणीय कार्य किया है। आप अपने पिता द्वारा निर्मित मिश्रबानी शैली का निष्ठापूर्वक प्रतिपादन करती हैं। आपने 'ओमे स्वरलिपि' नामक एक डिजिटल संगीत संकेतन प्रणाली का निर्माण कर सितार वादन के ्क्षेत्र में अवर्णनीय कार्य किया है। उनकी स्वाभाविक उत्कृष्टता ने उनके शिक्षकों को संगीत वाद्ययंत्र बजाने की दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए प्रभावित किया। उनकी संगीत शिक्षिका शोभा पर्वतकर ने रागिनी को जलतरंग बजाने के लिए प्रोत्साहित किया। आप सितार वादन के अतिरिक्त विचित्र वीणा और जल तरंग पर भी प्रस्तुति देती हैं।

नित संगीत अभ्यास और सितार वादन में विद्वता उन्हें विरासत में अपने पिता से मिली थी। मंच पर पहला सितार वादन मात्र 13 साल की आयु में सुप्रभा में हुआ था, यह कार्यक्रम किशन महाराज जी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। मिश्रबानी शैली के प्रतिपादक के रूप में, रागिनी ने विलाम्बित झूमरा ताल, विलम्बित झप ताल और मध्य-लय आड़ा चार ताल में गतकारी (लयबद्ध स्ट्रोक पैटर्न) के एक नए रूप को शामिल करते हुए तकनीक और शैली को समझने और अभ्यास करने की दिशा में महत्वपूर्ण काम किया है।

अनुष्का शंकर

अनुष्का शंकर एक ब्रिटिश भारतीय सितार वादक और संगीतकार हैं। वह भारत रत्न पंडित रविशंकर और सुकन्या राजन की बेटी हैं। अनुष्का शंकर का जन्म 9 जून 1981 लंदन में हुआ था। अनुष्का शंकर ने सात साल की उम्र में ही अपने पिता पंडित रविशंकर से सितार का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया था। उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक सितार प्रदर्शन 27 February 1995 को 13 साल की उम्र में अपने पिता के जन्मदिन समारोह के अवसर पर नई दिल्ली के सिरी फोर्ट में दिया था। इस सोलो डेब्यू के लिए उनके साथ तबला वादक जाकिर हुसैन भी थे।

अनुष्का शंकर ने एक भारतीय सितार वादक और संगीतकार के रूप में अपना नाम बनाया है। अनुष्का लंदन से दिल्ली और फिर सैन डिएगो, कैलिफ़ोर्निया में रहने के दौरान जिस शंकर परिवार में वह पली-बढ़ी, वह सांगीतिक वातावरण से परिपूर्ण था। अपने पिता पंडित रविशंकर के गहन मार्गदर्शन में, जिनके बिना 20वीं सदी का संगीत वैसा नहीं होता जैसा वह है अनुष्का ने नौ साल की उम्र से ही सितार और भारतीय

शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू कर दिया था। 13 साल की उम्र में अपने पेशेवर करियर की शुरुआत करने के बाद, उन्होंने हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद एक सफल एकल टूरिंग करियर शुरू करने से पहले अपने पिता के साथ दुनिया भर का दौरा करना शुरू कर दिया, जो जल्दी ही अपनी कलापूर्ण लेकिन भावनात्मक वादन शैली, असामान्य वाद्य-यंत्र और सटीक लयबद्ध अंतर्क्रिया के लिए जानी जाने लगी। एक लंबे और विविधतापूर्ण करियर के दौरान, अनुष्का एक ऐसी कलाकार के रूप में विकसित हुई हैं जो अपनी बहुसांस्कृतिक पहचान और प्रामाणिक, संवेदनशील स्वयं का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने पूरे अस्तित्व को सामने लाने में सक्षम है। अनुष्का अठारह वर्ष की आयु में ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स शील्ड पाने वाली सबसे कम उम्र की और पहली महिला हैं । ग्रैमी अवार्ड्स में लाइव प्रदर्शन करने वाली या प्रस्तुतकर्ता के रूप में सेवा करने वाली पहली भारतीय संगीतकार, जिन्होंने अविश्वसनीय ग्यारह नामांकन प्राप्त किए और नामांकित होने वाली पहली भारतीय महिला हैं । 'ए सूटेबल बॉय साउंडट्रैक' के लिए आइवर नोवेलो-नामांकित, रॉयल एकेडमी ऑफ म्यूजिक की मानद सदस्य, यूके ए-लेवल म्यूजिक सिलेबस में शामिल होने वाली पहली पांच महिला संगीतकारों में से एक और सबसे हाल ही में जून 2024 में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से संगीत में मानद उपाधि प्राप्त करने वाली पहली महिला भारतीय संगीतकार हैं । 2025 में अपने मौजूदा मिनी-एल्बम की त्रयी के तीसरे अध्याय के विमोचन और ब्राइटन फेस्टिवल के क्रिएटिव डायरेक्टरशिप के साथ स्टेज परफॉरमेंस के 30 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए, वह एक विलक्षण, शैली-विरोधी कलाकार हैं। आपने भारत की सांस्कृतिक विरासत और भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पटल पर स्थापित में करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रूपा पनेसर

रूपा पनेसर भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्कृष्ट सितार वादक हैं। सात साल की उम्र में ही आपने सितार की प्रारम्भिक शिक्षा प्रसिद्ध संगीतकार और शिक्षाविद् उस्ताद धर्मबीर सिंह जी से लेना शुरू कर दिया था। कालान्तर में आपने स्व० उस्ताद विलायत खान के सबसे वरिष्ठ शिष्य पंडित अरविंद पारिख जी से सितार की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। इसके अलावा आपने उस्ताद शाहिद परवेज, पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी, पं० अजय चक्रवर्ती और उस्ताद बहाउद्दीन डागर जैसे अन्य उत्कृष्ट संगीतकारों से भी मार्गदर्शन लिया है।

वर्तमान में आप ब्रिटेन में रहकर भारतीय संगीत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संरक्षित कर रहीं है। आपने अपने उत्कृष्ट सितार वादन के परिणामस्वरूप अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम, दौरे और टेलीविजन पर अनेक उत्कृष्ट कोटि के मंच प्रदर्शन के साथ ही लंदन के प्रतिष्ठित भारतीय शास्त्रीय संगीत समारोह दरबार महोत्सव में भाग लेने वाली पहली भारतीय महिला सितार वादक हैं। आपने मर्करी पुरस्कार विजेता तल्विन सिंह एंव के साथ भी काम किया

डॉ. सुप्रिया शाह

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में डॉ. सुप्रिया शाह एक महान कलाकार हैं, डॉ. सुप्रिया शाह की सांगीतिक यात्रा 13 वर्ष की आयु में स्वर्गीय पंडित सतीश चंद्रा जी के मार्गदर्शन में शुरू हुई। इसके बाद इन्होंने मैहर घराने के सुप्रसिद्ध सितार वादक एंव पंडित रविशंकर जी के वरिष्ठ शिष्य स्वर्गीय पंडित उमा शंकर मिश्रा जी का शिष्यत्व ग्रहण कर सितार वादन की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। इनकी सितार व संगीत की शिक्षा अनवरत जारी है। वर्तमान में ये ग्रैमी पुरस्कार विजेता पद्म भूषण पंडित विश्वमोहन भट्ट जी से संगीत की बारिकियों को आत्मसात कर रहीं है।

इनका सितार वादन न केवल मैहर घराने के परम्परागत शैली को संरक्षित करता है, बल्कि नवीनता को भी अपनाते है हुए एक अभिनव सौन्दर्य कलात्मक वैशिष्ट्य का निर्माण करता है। इन्होने अपने कला कौशल के द्वारा ऑल इंडिया रेडियो के एक वर्गीकृत कलाकार के रूप में, प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में उनके प्रदर्शन ने मीडिया, अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों, पारखी और संगीत प्रेमियों से समान रूप से प्रशंसा प्राप्त की है। दुनिया भर में 150 से अधिक डिजिटल प्लेटफार्मों पर 'धुन म्यूजिकल' द्वारा 'सितार कवर' और 'ऐ री सखी' के म्यूजिक वीडियो को सभी कला प्रेमी ने काफी सराहा तथा दिल्ली आकाशवाणी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता में सर्वोत्तम कलाकार के रूप में राष्ट्रपति द्वारा ''स्वर्ण पदक'' प्राप्त किया।

मंच से परे, डॉ. शाह ने संगीत और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक संरक्षक और सांस्कृतिक प्रेरक के रूप में उनकी भूमिका हिंदुस्तानी प्रदर्शन कला और संस्कृति को लोकप्रिय बनाने, भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध विरासत का उत्सव मनाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों को वैश्विक पटल पर रखने में महत्वपूर्ण रही है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एक संकाय सदस्य के रूप में, उन्होंने न केवल अनगिनत छात्रों को ज्ञान प्रदान किया है, बल्कि लगभग पंद्रह वर्षों के कार्यकाल में अनगिनत छात्रों के लिए एक संरक्षक और प्रेरक शक्ति के रूप में भी काम किया है। उनकी ऑनलाइन कक्षाएं भौगोलिक सीमाओं को पार कर दुनिया भर के सितार प्रशिक्षुओं तक पहुंच रही हैं। डॉ. सुप्रिया शाह की कलात्मकता ने, शिक्षा और अनुसंधान के प्रति उनके समर्पण के साथ मिलकर, एक ऐसी विरासत बनाई है जो समय और परंपरा की सीमाओं से परे है। एक कलाकार और गुरु दोनों के रूप में शास्त्रीय संगीत की दुनिया पर उनका प्रभाव, उन्हें भारत की सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक संगीत परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली एक प्रतिष्ठित शख्सियत के रूप में स्थापित करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित महिला सितार वादक भारतीय शास्त्राय संगीत जगत के जगमगाते सितारे हैं। इन सब वादिकाओं ने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी लगन तथा मेहनत से सितार वादन की समृद्ध परम्परा को आगे बढ़ाने में विशिष्ट भूमिका निभायी है। ये सभी सितार साधिकायें पारम्परिक धरोहर का निर्वहन करते हुए अपने सितार वादन में नवीन आयामों का समावेश कर गतकारी में राग के स्वरूप को लय तथा ताल में निबद्ध कर विभिन्न प्रकार के छन्दों का प्रयोग, बोलों का प्रयोग तथा तिहाइयों के प्रयोग का सुन्दर कलात्मकता वैशिष्ट्य का समावेश कर भारतीय शास्त्रीय सितार वादन का संरक्षण एंव संवर्धन करते हुए इसे न केवल भारत में अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दैविप्यमान करने में अवर्णनीय व अतुलनीय योगदान दिया है।

संदर्भ

शर्मा, डॉ0 शान्तनु, 'प्रतिष्ठित सितार एवं सरोद वादको की साधना एवं संघर्ष', कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स (2005)
वाद्य संगीत के घराने, मुन्ना शुक्ला, संगना पत्रिका, 2011 जुलाई से दिसम्बर अंक
http://WWW.mitanag.com
https://music.du.ac.in/professor/anupam-mahajan.php
https://en-m-wikipedia.org
डॉ सुप्रिया शाह (वाराणसी) से लिए गए साक्षात्कार द्वारा, दिनांक 28.02.2024